2 स्थानीय विरासत

संग्रहालय भ्रमण क्यों महत्वपूर्ण है

- सामान्यतया संग्रहालयों में मानव की कुछ बेहतरीन और सृजनात्मक उपलब्धियों का भंडारण और प्रदर्शन किया जाता है।
- संग्रहालयों से मूल ऐतिहासिक वस्तुओं का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया जा सकता है।
- 'हम कौन हैं।' यह जानने में संग्रहालय हमारे ज्ञान को बढ़ाते हैं।
- संग्रहालयों में स्व, समूह, स्कूल, कक्षा, पारिवारिक अधिगम, बहु-विषयक क्रियाकलापों और जीवन मूल्यों की शिक्षा हेतु एक अनौपचारिक वातावरण होता है।
- संग्रहालय में एकत्रित वस्तुओं के अन्वेषण और खोज की प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त ज्ञान से संबंधित विषय में और रुचि उत्पन्न की जा सकती है।
- संग्रहालय दर्शकों की सृजनात्मक क्षमता को विकसित कर सकता है।

संग्रहालयों को अधिगम केंद्र क्यों कहा जाता है?

संग्रहालय भ्रमण के शैक्षिक लक्ष्य

- संग्रहालय की अवधारणा से परिचित कराना और अमूल्य अधिगम संसाधन के रूप में इस संस्था का उपयोग करना।
- विभिन्न कला-रूपों की जानकारी देना।
- प्रेक्षणात्मक कौशल (Observational skill) का विकास करना।
- लेखन और मौखिक कौशलों का विकास करना।
- निगमन और निष्कर्ष निकालने की शक्तियों का विकास करना।
- संग्रहालय सीखने की प्रक्रिया को सूचनाप्रद, रुचिकर और मनोरंजक बनाने में सहायता करते हैं।
- संग्रहालय भ्रमण प्राचीन धरोहरों और दुर्लभ हस्तशिल्प के संरक्षण की आवश्यकता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में सहायक होते हैं।

क्रियाकलाप 2.1

संग्रहालय भ्रमण

कक्षा–11 और 12

समय–गृहकार्य

संग्रहालय वह स्थान है जहाँ पर ऐतिहासिक, कलात्मक और वैज्ञानिक महत्त्व की वस्तुएँ अध्ययन, संरक्षण और सार्वजनिक प्रदर्शन हेतु रखी जाती हैं। भारत में विभिन्न प्रकार के संग्रहालय निम्नलिखित हैं–

- राष्ट्रीय संग्रहालय
- राज्य संग्रहालय
- क्षेत्रीय संग्रहालय
- कला संग्रहालय
- मानव विज्ञान संबंधी (Anthropological) संग्रहालय
- इतिहास और पुरातत्व संग्रहालय
- स्मारक संग्रहालय
- सैन्य संग्रहालय
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी संग्रहालय
- अन्य विशिष्ट संग्रहालय जैसे रेल संग्रहालय, रक्षा सेना संग्रहालय इत्यादि।

संग्रहालय का उद्देश्य क्या है?

सुझाए गए क्रियाकलाप

अपने कस्बे/शहर/क्षेत्र में स्थित विभिन्न प्रकार के संग्रहालयों की सूची बनाएँ।

- प्रत्येक संग्रहालय की विशेषताओं की सूची बनाएँ।
- प्रत्येक संग्रहालय का पता, समय और रास्ते की जानकारी भी सूची में शामिल करें।

कावड़, गुजरात

क्रियाकलाप 2.2

इतिहास के रहस्य

कक्षा–11

समय–संग्रहालय भ्रमण

जब तक किसी वस्तु को अर्थ नहीं देते, तब तक उसकी सार्थकता नहीं होती। संग्रहालय में वस्तुओं के सूक्ष्म निरीक्षण से अतीत के कई रहस्यों को उजागर करने में सहायता मिल सकती है। वस्तु के संबंध में कुछ जानकारी तो संग्रहालय में भी दी गई होती है। यह जानकारी वस्तु पर लगे लेबल अथवा उसके निकट रखी सूचना-पट्टिका में दी जाती है। इस जानकारी को सावधानीपूर्वक लिपिबद्ध करें। एक गैलरी विशेष में से एक वस्तु अथवा वस्तु-समूह को चुनें और निम्नलिखित अभ्यास पूर्ण करें। यह वस्तु सिरेमिक पॉट, पेंटिंग, आभूषण, मूर्ति, वस्त्र इत्यादि हो सकती है।

अभ्यास

चयनित वस्तु को देखने अथवा उसका अध्ययन करने से प्राप्त जानकारी को लिपिबद्ध करें।

- वस्तु क्या है?
- यह किससे बनी है?
- इसे कैसे बनाया गया है?
- क्या इसे हाथ से अथवा मशीन से बनाया गया है?
- इसे बनाने में किन उपकरणों का उपयोग किया जाता है?
- यह अपने से संबद्ध काल के बारे में क्या जानकारी देती है?
- हम इस वस्तु को बनाने वाले समुदाय के काल और संस्कृति के बारे में क्या समझते हैं?
- इस वस्तु की किन विशेषताओं ने आपको इसे अध्ययन हेतु चुनने के लिए आकर्षित किया?
- क्या आज भी ऐसी वस्तुएँ बनती हैं?
- वे डिज़ाइन, उपयोगिता और कौशल/कलात्मकता में संग्रहालय में रखी वस्तुओं से किस प्रकार भिन्न हैं?

क्या आपके क्षेत्र में कोई विचित्र संग्रहालय है?
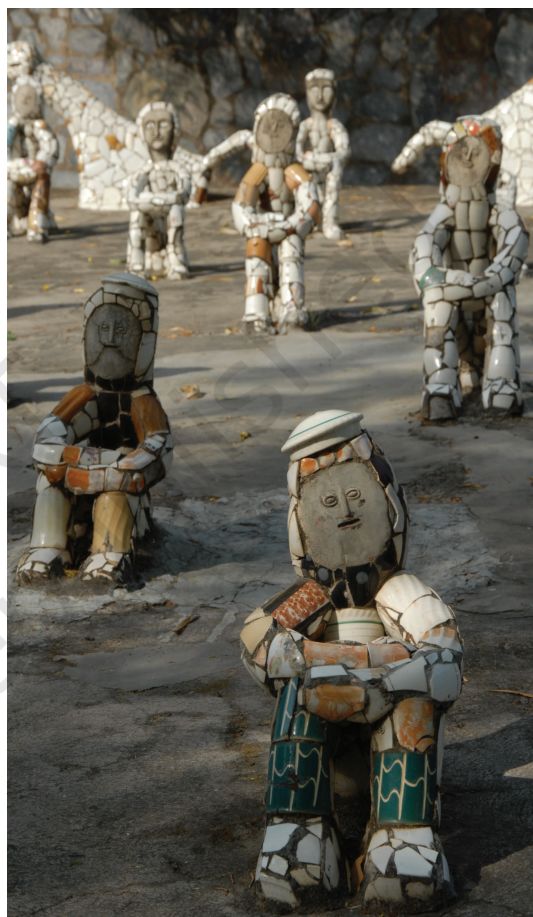
अपशिष्ट सामाग्री (कचरे) से बनाई गई कृतियाँ, रॉक गार्डन, चंडीगढ़

क्रियाकलाप 2.3

शिल्प के ऐतिहासिक उदाहरण

कक्षा–11 और 12
समय–संग्रहालय भ्रमण

संग्रहालय में रखी वस्तुओं के प्रदर्शन को कैसे अधिक रोचक बनाया जा सकता है?

यदि आप सैद्धांतिक अथवा प्रायोगिक कक्षा में एक विशिष्ट शिल्प के बारे में पढ़ रहे हैं, तो देखें कि आपको इसके ऐतिहासिक उदाहरण स्थानीय संग्रहालय में मिल सकते हैं अथवा नहीं। संग्रहालय की किसी वस्तु विशेष के बारे में 200 शब्दों का लघु निबंध लिखें। उस वस्तु के निर्माण में प्रयुक्त कौशल और तकनीकों को समझने के लिए उस वस्तु का अध्ययन करें। क्या वे आज प्रयुक्त होने वाले कौशल और तकनीकों से भिन्न हैं? क्या कुछ कौशल और तकनीकें लुप्त हो गई हैं?

संग्रहालय में प्रदर्शित विविध प्रकार की वस्तुएँ

क्रियाकलाप 2.4

विलुप्त होती विरासत

कक्षा–12

समय–गृहकार्य

हमारे देश के आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में शिल्प की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़ें और कक्षा में वाद-विवाद और चर्चा हेतु इससे प्रेरणा लें।

...ये झाड़-फानूस, लैंप, यूरोप में निर्मित कुर्सियाँ, खूबसूरत कपड़े, टोपियाँ, अंग्रेज़ी कोट, महिला-टोपी, फ्रॉक्स, चाँदी की मढ़ी हुई बेंत और आपके घर की ऐश्वर्ययुक्त साज-सज्जा कुछ और नहीं बल्कि भारत की गरीबी के प्रतीक चिह्न हैं, भारत की भूख के स्मृति-चिह्न हैं। इन यूरोप निर्मित वस्तुओं पर जो रुपया आपने खर्च किया है, वह वो रुपया है जिसे आपने अपने उस गरीब भाई, ईमानदार शिल्पकार से छीना है जिसके पास अब आजीविका का कोई साधन नहीं है...

– भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के
एक कट्टर सदस्य के भाषण से उद्धृत, 1891

कौशल का समाप्त होना किसी प्रजाति के नष्ट होने, विरासत के समाप्त होने अथवा विलुप्त होने के समान है...

आज देश के आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में शिल्प की भूमिका की स्पष्ट और सटीक समझ आवश्यक है। क्या हम ऐसे परिदृश्य की कल्पना कर सकते हैं जहाँ मशीन-निर्मित वस्तुएँ हस्त-निर्मित कलाकृतियों को पूर्णतया प्रतिस्थापित कर देंगी? क्या हम ऐसे ग्रामीण समुदायों की कल्पना कर सकते हैं, जो अपने वातावरण में, घरों में और अपने शरीर पर केवल मशीन-निर्मित सिंथेटिक उत्पादों का उपयोग करते हों? क्या हम ऐसी परिकल्पना कर सकते हैं कि भविष्य में शिल्प अपने संबद्ध कला कौशल के साथ वातावरण से पूर्णतः लुप्त हो जाएगा?

यदि अत्यधिक सतर्कता न बरती गई तो यह परिदृश्य अपरिहार्य है। ग्रामीण बाज़ारों में बढ़ती हुई प्लास्टिक संस्कृति, समाप्त होते हुए ग्रामीण-मूल्य और ग्रामीण आचार-विचार में उपभोक्तावाद के आने से रंग और आकार के प्रति स्वाभाविक प्रतिक्रिया को खतरा है। इस कारण कला-कौशल लुप्तप्राय हो जाते हैं।

पहले ही हम देख रहे हैं कि हाथ से गढ़े हुए सोने के समान दमकते पीतल के बर्तन जिनके कारण प्राचीन काल के ग्रामीण भारत की रसोई देखने योग्य होती थी, अब लुप्त होकर संग्रहालयों में एंटीक (प्राचीन काल का सामान) बन गए हैं।

ग्रामीण घरों में पीतल और ताँबे का स्थान अब स्टेनलेस स्टील और एल्युमिनियम ने ले लिया है। आग की भट्टियों में पकी हुई मिट्टी की टाइलों को छतों पर रखा जाता था। प्रत्येक टाइल पर टैराकोटा और काले रंग के असमान शेड होते हैं, जिनका रंग आग और धुएँ द्वारा निर्धारित होता है। टैराकोटा से निर्मित इन रचनाओं में आकस्मिक उत्पत्ति का यह विशिष्ट गुण अब लुप्त हो चुका है।

एक प्लास्टिक का बर्तन कितने दिन चलता है? क्या आपको लगता है कि यह मिट्टी अथवा धातु के बर्तन का बेहतर विकल्प है?

गाँवों में कुम्हार अब छत बनाने हेतु काम में आने वाली खपरैल भट्टी में नहीं पकाता। टैराकोटा की खपरैल वाली छतें अब कंक्रीट जैसी सामग्री से प्रतिस्थापित हो रही हैं, जो ताप को बढ़ाती हैं और छोटे घरों के लिए हानिकारक होती हैं...

पोत की एक विशिष्ट खूबसूरती, नंगे पैरों के नीचे नरकट की बुनी हुई चटाई का एहसास, बुनकर के हाथों और आँखों के मध्य ध्यान की स्थिति, जब वह शटल को उछालता है और जिसके परिणामस्वरूप असमान बुनाई जन्मती है। इस यांत्रिक, भौतिकवादी संसार में इसे कमी माना जाता है लेकिन रचनात्मक संसार में यही 'कमी' कपड़े को विशिष्टता प्रदान करती है। हाथ से बुने हुए कोई भी दो कपड़े एक जैसे नहीं हो सकते। शिल्पकार के हाथ में जीवन है और हाथ से बुना हुआ कपड़ा पहनने पर त्वचा को छूता है और ऊर्जा प्रदान करता है।

— *पुपुल जयकर*, 'द चिल्ड्रन ऑफ़ बैरन वीमेन'

मिट्टी से बनी छत की खपरैल, मध्य प्रदेश

विचार-विमर्श और निबंध के विषय

1. ऊपरिलिखित दोनों अनुच्छेदों के मुख्य विचार बिंदु क्या हैं?
2. शिल्प देश के आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में कैसे योगदान करता है?
3. प्लास्टिक के आने और औद्योगीकरण के कारण पारंपरिक मूल्यों का ह्रास कैसे हुआ है?
4. पारंपरिक शिल्पकार कारखाने में निर्मित सस्ते और अत्यधिक मात्रा में उत्पादित सामान से कैसे प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं?
5. पुपुल जयकर के अनुसार कारखाने में निर्मित और हस्त-निर्मित वस्तुओं में क्या अंतर है। क्या आप इससे सहमत हैं?
6. हस्तशिल्प में ऐसा क्या है जो यांत्रिक रूप से उत्पादित वस्तुओं में नहीं है?
7. यदि कारखाने में निर्मित वस्तुएँ उच्च स्तरीय मानकीकरण की गारंटी देती हैं तो फिर पारंपरिक हस्तशिल्प का चयन क्यों किया जाए?
8. जब एक शिल्प-वस्तु का धार्मिक महत्त्व समाप्त हो जाता है तो उस शिल्प परंपरा का क्या होता है? घरेलू उदाहरणों सहित समझाएँ।
9. जब देव प्रतिमाएँ बहुतायत से उत्पादित की जाती हैं और गणेश जी की प्लास्टिक की मूर्ति चीन में बनाई जाती है तो फिर उपभोक्ता और उत्पादक के लिए इसका क्या अर्थ और महत्त्व है?
10. कौशल के लुप्त हो जाने से विरासत विलुप्त और कमज़ोर कैसे होती है?

कई सदियों से शिल्प परंपराओं में परिवर्तन आया है। शिल्पी समुदाय के लोग अन्य क्षेत्रों में चले गए हैं। उन्होंने अपना व्यवसाय बदल लिया है और नई माँगों की पूर्ति हेतु शिल्प-उत्पादों का विकास किया है। एक केस-स्टडी के निम्नलिखित उद्धरण को पढ़ें और शिल्प-क्षेत्र में परिवर्तन के विभिन्न कारणों पर प्रकाश डालें।

फूस से निर्मित छप्पर वाला घर, असम

शिल्पकार नई डिज़ाइन और तकनीकें कहाँ से सीख सकते हैं?

चंबा से कैलीफोर्निया तक

"आप मुझे चंबा में डोगरा बाज़ार में भी मिल सकते हैं। क्या आप जानते हैं कि चंबा हिमाचल प्रदेश में एक छोटा-सा पहाड़ी कस्बा है?''- हकम सिंह ने पूछा। वह कई प्रकार की धातुओं के मिश्रण से बनी छोटी-छोटी खूबसूरत मूर्तियों के बीच बैठे थे। यह स्थान नई दिल्ली के बाहर स्थित सूरजकुंड है। यहाँ प्रतिवर्ष फरवरी में वार्षिक शिल्प मेले का आयोजन किया जाता है।

हकम सिंह ने काला कोट पहना है और उनके गले में हरे रंग का मफलर है। वह सिर पर चमकीली कुल्लू टोपी पहनते हैं और उनकी छोटी-सी दाढ़ी है। ऐसा लगता है कि वह दिल्ली जैसे महानगर में भी घर जैसा अपनापन महसूस कर रहे हैं। वह बताते हैं कि वह अक्सर यहाँ क्राफ्ट्स म्यूज़ियम में आते रहते हैं। ''इस केंद्र के माध्यम से मेरी कला को पहचान मिली है। मैं अपनी शिल्पकला में सुधार के लिए नई तकनीकें और डिज़ाइन सीखता रहता हूँ, साथ ही नए संपर्क भी बनाता हूँ।'' उनकी ऑर्डर बुक नए संपर्कों से भरी हुई है जिसमें कैलीफोर्निया तक के क्रेता भी शामिल हैं। म्यूज़ियम में आने वाले अन्य शिल्पकारों के साथ उनकी दोस्ती भी हो गई है जिसके परिणामस्वरूप उन्हें अन्य शिल्प सीखने में भी सहायता मिलती है। भारतीय शिल्पकला संबंधी पुस्तकों में छापी गई तसवीरों पर आधारित डिज़ाइनों से उन्हें धातु में कुछ नई वस्तुएँ बनाने की प्रेरणा मिली है। गर्व से भरे हकम सिंह का कहना है ''यदि आप शिल्पकार हैं और सभी खूबसूरत चीज़ों पर नज़र रखते हैं तो एक शिल्प से दूसरे शिल्प को अपनाना आपके लिए रोचक है।''

यह विचित्र बात है कि हकम सिंह एक प्रशिक्षित डेंटिस्ट टैक्नीशियन हैं और उन्होंने अस्पतालों में डॉक्टरों के साथ काम भी किया है। उनके पिता भी अंग्रेज़ों के साथ 'डेंटिस्ट' थे और वे काम के सिलसिले में लाहौर गए थे। पिता और पुत्र की इस जोड़ी ने सोने और चाँदी के आभूषण-निर्माण की पारिवारिक शिल्पी परंपरा से अलग हटकर कार्य किया। जब हकम सिंह अस्पताल में कार्य कर रहे थे तो उन्होंने धातु में मूर्ति-कला के अपने शौक को पुन: विकसित करने का निर्णय किया। जब वह युवा थे तो उन्होंने अपने एक मित्र के परिवार से यह शिल्प सीखा था। वह परिवार चंबा के उन शेष तीन पारंपरिक परिवारों में से है जो अभी भी पीतल, गनमैटल (ताँबे और राँगे की मिश्रित धातु) और अन्य मिश्रित धातुओं के माध्यमों के उपयोग से धातु शिल्प की समाप्त हो चुकी वैक्स एंड सैंड कास्टिंग प्रविधियों से कार्य करते हैं।

धातु शिल्प, बिहार

पिछले कई वर्षों में उन्होंने अन्य शिल्पकारों के साथ निरंतर संपर्क व बातचीत से अपनी तकनीक को पूर्ण रूप से निखारा है और अधिकांश पारंपरिक शिल्पकारों की तुलना में अधिक व्यापक अवसर मिलने के कारण हकम सिंह आज एक प्रवीण शिल्पकार बन गए हैं। हकम सिंह अपने कौशल को दूसरों के साथ बाँटने में विश्वास करते हैं। वे एक ऐसे शिल्पकार संघ के सदस्य बन गए है, जहाँ उनके जैसे कई कारीगर, कूड़ा बीनने वाले किशोरों को स्वयं शिल्प-कौशल सिखाते हैं ताकि उन्हें आजीविका के वैकल्पिक साधनों हेतु प्रशिक्षित किया जा सके। उनकी पहली परियोजना और कार्यशाला हाल ही में भीलवाड़ा, राजस्थान में आयोजित की गई। शिल्पकार संघ द्वारा यात्रा, भोजन और रहन-सहन का खर्च वहन किया जाता है और कारीगरों द्वारा बेसहारा बच्चों को एक माह का प्रशिक्षण दिया जाता है।

उनकी यह रोचक कहानी सुनने के बाद जैसे ही हम चलने वाले थे, हकम सिंह ने बताया "...अब एक बड़े अमेरिकन संग्रहकर्ता के निमंत्रण पर वे कैलीफोर्निया जा रहे हैं। वही उनके लिए टिकट, रहन-सहन तथा सामग्री की व्यवस्था करेगा तथा उन्हें भुगतान भी करेगा। वे वहाँ तीन महीने तक रहेंगे और संग्रहकर्ता द्वारा स्वयं के लिए चुने गए डिज़ाइन सोने, चाँदी तथा काँसे में तैयार करेंगे...."

– प्रीति जैन, एक्सप्लोरिंग इंडियन क्राफ्ट्स

विभिन्न धातुओं से हस्त-निर्मित आभूषण

विचार-विमर्श तथा निबंध विषय

1. पारंपरिक शिल्पकार को तब कैसा लगता है जब उसे वे वस्तुएँ बनानी पड़ती हैं जिनका उसके लिए न तो कोई धार्मिक महत्त्व होता है और न ही कोई स्थानीय बाज़ार?
2. ऐसा व्यक्ति अपनी पृष्ठभूमि से कैसे जुड़ा रह सकेगा? क्या उसके इस प्रकार जुड़े रहने की आवश्यकता है?
3. आपके क्षेत्र में कौन सी शिल्प परंपराएँ प्रसिद्ध थीं और वे लुप्त क्यों हुईं? उन्हें पुनर्जीवित करने हेतु क्या किया जा सकता है?